॥ श्री ॥
चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
637

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यसदानन्दयोगीन्द्रविरचितः

वेदान्तसारः

हिन्दीरूपान्तर-तत्त्वपारिजाताख्यहिन्दीव्याख्या-संवलितः

हिन्दीव्याख्याकारः सम्पादकश्च
डॉ. सन्तनारायण श्रीवास्तव्य
सेवानिवृत्त प्रोफेसर,
संस्कृत-पालि-प्राकृत एवं प्राच्यभाषा विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

विषयानुक्रमणिका

खण्ड		पृष्ठ
१.	**मङ्गलाचरण (आत्माका आश्रयण)** आत्माके विशेषण — अखण्डम् २, सच्चिदानन्दम् ३, अवाङ्मनसगोचरम् ४, स्वरूपलक्षण और तटस्थलक्षण ४, अखिलाधारम् ५, आत्माश्रयणका प्रयोजन ५।	१
२.	**गुरुवन्दना और ग्रन्थनिर्माणकी प्रतिज्ञा**	६
३.	**वेदान्तपदवाच्य ग्रन्थ और अनुबन्धोंका उल्लेख** उपनिषद् ७, शारीरकसूत्रादीनि ८, प्रकरणका लक्षण ९।	७
४.	**अनुबन्धचतुष्टय**	९
५.	**प्रथम अनुबन्ध — अधिकारीका लक्षण** साधनचतुष्टयसम्पन्नः ११, नितान्तनिर्मलस्वान्तः ११, निर्गतनिखिल-कल्मषतया ११, त्याज्य और अनुष्ठेय कर्म ११, अधिगताखिल-वेदार्थः १२, 'जन्मान्तरे वा'का औचित्य १२, प्रमाता १४।	११
६.	**त्याज्य और अनुष्ठेय कर्मोंके लक्षण और उदाहरण** काम्य और निषिद्ध १५, नित्यकर्म १५, नैमित्तिककर्म १६, प्रायश्चित्त १६, उपासना १६, शाण्डिल्यविद्या १७।	१४
७.	**अनुष्ठेय कर्मोंका परमफल तथा अवान्तरफल**	१७
८.	**साधनचतुष्टय** नित्यानित्यवस्तुविवेक २२, इहामुत्रार्थफलभोगविराग २३, शम और दम २४, उपरति २४, तितिक्षा २५, समाधान २६, श्रद्धा २७, मुमुक्षुत्व २७।	२०
९.	**अवशिष्ट अनुबन्ध** विषय ३१, सम्बन्ध ३२, प्रयोजन ३२, ग्रीवास्थग्रैवेयकन्याय ३३।	३०
१०.	**आत्मज्ञानके लिए अधिकारीका कर्त्तव्य** अध्यारोपापवादन्याय ३६।	३४
११.	**अध्यारोपका लक्षण** अज्ञानका लक्षण ३८, अनिर्वचनीयम् ३८, त्रिगुणात्मकम् ३९, ज्ञान-विरोधि ३९, भावरूपम् ४०, यत्किञ्चित् ४०, अज्ञानमें प्रमाण ४१।	३७

१२. **अज्ञानसमष्टि और उससे उपहित चैतन्य (ईश्वर)** ४२
समष्टि और व्यष्टि ४३, उपाधि ४४।

१३. **अज्ञानव्यष्टि और उससे उपहित चैतन्य (प्राज्ञ)** ४६

१४. **ईश्वर और प्राज्ञका भोग, उनका और उनकी उपाधियोंका अभेद** ५१

१५. **अनुपहित तुरीय चैतन्य और "तत्त्वमसि" महावाक्यका लक्ष्यार्थ** ५३
लक्षणा ५५, तप्तायःपिण्डका दृष्टान्त ५५, महावाक्यका अर्थ ५६।

१६. **अज्ञानकी दो शक्तियाँ** ५६
आवरणशक्ति ५८, विक्षेपशक्ति ५८।

१७. **ईश्वरकी निमित्तोपादानकारणता** ५९
आक्षेप और समाधान ६१।

१८. **अज्ञानोपहित चैतन्यसे आकाशादि सूक्ष्मभूतोंकी उत्पत्ति** ६२

१९. **सूक्ष्मशरीरकी उत्पत्ति तथा उसके सत्रह अवयव** ६५

२०. **विज्ञानमयकोश और मनोमयकोश** ६८

२१. **पञ्चकर्मेन्द्रिय और पञ्चवायु** ६९

२२. **पञ्चवायुके सम्बन्धमें मतान्तर** ७१

२३. **प्राणमयकोश** ७२

२४. **सूक्ष्मशरीरमें कोशोंकी व्यवस्था** ७३

२५. **समष्टि सूक्ष्मशरीर तथा उससे उपहित चैतन्य (सूत्रात्मा)** ७४

२६. **व्यष्टि सूक्ष्मशरीर और उससे उपहित चैतन्य (तैजस)** ७६

२७. **सूत्रात्मा और तैजसका भोग, उनका तथा उनकी उपाधियोंका अभेद** ७७

२८. **पञ्चीकरणकी प्रक्रिया — स्थूलभूतोंकी उत्पत्ति** ७८

२९. **पञ्चीकरणका प्रामाण्य और स्थूलशब्दादिकी अभिव्यक्ति** ८०

३०. **स्थूलभूतोंसे चौदह लोकों और चतुर्विध स्थूलशरीरोंकी उत्पत्ति** ८२

३१. **स्थूलशरीरोंकी समष्टि तथा उससे उपहित चैतन्य (वैश्वानर)** ८४

३२. **व्यष्टिस्थूलशरीर और उससे उपहित चैतन्य (विश्व)** ८५

३३. **वैश्वानर और विश्वका भोग, उनका तथा उनकी उपाधियोंका अभेद** ८६

३४. **त्रिविध प्रपञ्चोंका समष्टिभूत महान् प्रपञ्च** ८९

३५. **'सर्वं खल्विदं ब्रह्म'का अर्थ — सामान्य अध्यारोपका उपसंहार** ९१

३६. विशेष अध्यारोप — पुत्रात्मवाद ९३
अरुन्धतीप्रदर्शनन्याय ९४, पुत्रादिदीक्षाग्रहणन्याय ९५।

३७. चार्वाकमत — स्थूलदेहात्मवाद ९६

३८. चार्वाकमत — इन्द्रियात्मवाद ९९

३९. चार्वाकमत — मुख्यप्राणात्मवाद १००

४०. चार्वाकमत — मन आत्मवाद १०२

४१. बौद्धमत — क्षणिकविज्ञानात्मवाद १०३

४२. प्राभाकर और नैयायिकमत — अज्ञानात्मवाद १०५

४३. भाट्टमीमांसक मत — अज्ञानोपहितचैतन्यात्मवाद १०६

४४. बौद्धमत — शून्यात्मवाद १०८

४५. आत्मविषयक उक्तमतोंका परस्पर बाधन — पुत्रादिका अनात्मत्व १०९

४६. प्रबल प्रमाणोंद्वारा उक्तमतोंका खण्डन और वेदान्तमतकी स्थापना ११०

४७. अपवादका लक्षण, विकार और विवर्त्त ११५

४८. अपवादकी प्रक्रिया ११८

४९. अध्यारोप-अपवादके द्वारा तत् और त्वम् पदोंका अर्थशोधन १२०

५०. तत्त्वमसि महावाक्य और सम्बन्धत्रय १२१

५१. सामानाधिकरण्य १२३

५२. विशेषणविशेष्यभाव १२५

५३. लक्ष्यलक्षणभाव १२६
लक्षणाके भेद १२७, जहल्लक्षणा १२७, अजहल्लक्षणा १२७, जहदजहल्लक्षणा १२७।

५४. अभिधासे महावाक्यार्थबोधका खण्डन १२९
'नीलमुत्पलम्' में वाच्यार्थकी सङ्गति १३०, 'तत्त्वमसि' में वाच्यार्थकी असङ्गति १३१, संसृष्टार्थका निषेध १३२।

५५. जहल्लक्षणासे महावाक्यार्थबोधका खण्डन १३३

५६. अजहल्लक्षणासे महावाक्यार्थबोधका खण्डन १३६

५७. भागलक्षणासे ही अखण्डार्थबोध सम्भव १३९

५८. अनुभववाक्यके अर्थका निरूपण — ब्रह्मावबोधकी प्रक्रिया १४१

५९. **ब्रह्मावबोधमें वृत्तिव्याप्तिकी अपेक्षा, किन्तु फलव्याप्तिका निषेध** १४९
वृत्तिव्याप्ति १४९, फलव्याप्ति १५०, श्रुतियोंमें प्रतीयमान विरोधका निराकरण १५०।

६०. **ब्रह्मसाक्षात्कारके साधन** १५५
श्रवण १५५, षड्विध लिङ्ग १५५।

६१. **मनन निदिध्यासन तथा सविकल्पक समाधि** १५७

६२. **निर्विकल्पक समाधि — सुषुप्तिसे भेद** १६१

६३. **निर्विकल्पकसमाधिके अङ्ग** १६५
यम १६६, नियम १६९, आसन १७४, प्राणायाम १७५, प्रत्याहार १७७, धारणा १७७, ध्यान १७८, समाधि १७८।

६४. **समाधिके विघ्न और उनका निवारण** १७९
लय १८०, विक्षेप १८०, कषाय १८०, रसास्वाद १८१, **निवारणोपाय** — लय १८३, विक्षेप १८३, कषाय १८४, रसास्वाद १८४।

६५. **जीवन्मुक्तका लक्षण** १८५
सञ्चित क्रियमाण और प्रारब्ध कर्म १८७, कर्मफलकी अपरिहार्यता १८८, तत्त्वज्ञानसे कर्मराशिका विनाश १८८।

६६. **जीवन्मुक्तकी लोकव्यवहारके प्रति मिथ्यात्वबुद्धि** १९२
तत्त्वज्ञानसे प्रारब्धक्षय असम्भव १९४।

६७. **जीवन्मुक्तके व्यवहारकी समीक्षा** १९६

६८. **प्रारब्धक्षयके अनन्तर विदेहमुक्ति** २०२
स्वेच्छाप्रारब्ध २०३, अनिच्छाप्रारब्ध २०३, परेच्छाप्रारब्ध २०३, उत्क्रमणका निषेध २०५, परब्रह्ममें विलय २०५।

परिशिष्ट

वेदान्तसार-तत्त्वपारिजात-गतोद्धरणानामकाराद्यनुक्रमः २०९

श्रीमच्छङ्करभगवत्पूज्यपादविरचितं षट्पदीस्तोत्रम् २१५

विदुषां सम्मतयः २१६